THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-05 | Issue-01 | April-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i1.66

अहेरिया जाति में शिक्षा एवं स्वास्थ्य समस्याएँ और सरकारी रोजगार में प्रतिनिधित्व के कारण एवं परिणाम का समाजशास्त्रीय अध्ययन

ब्रह्मपाल[1], डॉ. कमलेश भारद्वाज[2]

[1]शोधकर्ता,यू.जी.सी.नेट (समाजशास्त्र),समाजशास्त्र विभाग, शम्भु दयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद,

[2]प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, शम्भु दयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद,

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन अहेरिया जाति की शिक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारणों तथा उनके परिणामों के साथ–साथ सरकारी रोजगार में उनके प्रतिनिधित्व की स्थिति का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन सिकंदराबाद तहसील, बुलंदशहर जनपद में किया गया, जहाँ अहेरिया जाति की उल्लेखनीय जनसंख्या पाई जाती है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य इस समुदाय की शैक्षिक, स्वास्थ्य एवं रोजगार संबंधी वास्तविक स्थिति को समझना तथा उनके पिछड़ेपन के प्रमुख कारणों की पहचान करना है।

इस शोध में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। कुल 100 उत्तरदाताओं (54 पुरुष एवं 46 महिलाएँ) से प्राथमिक आंकड़े साक्षात्कार एवं संरचित प्रश्नावली के माध्यम से एकत्रित किए गए, जबकि द्वितीयक आंकड़ों के लिए विभिन्न पुस्तकों, शोध पत्रों एवं सरकारी रिपोर्टों का उपयोग किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत एवं सारणीकरण विधियों के माध्यम से किया गया।

अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि अहेरिया जाति में शिक्षा का स्तर निम्न है तथा अशिक्षा और विद्यालय त्याग की प्रवृत्ति व्यापक रूप से विद्यमान है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में कुपोषण, स्वच्छता की कमी तथा स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव प्रमुख समस्याएँ हैं। इन समस्याओं के पीछे गरीबी और जागरूकता की कमी मुख्य कारण के रूप में सामने आई है। सरकारी रोजगार के क्षेत्र में भी इस समुदाय का प्रतिनिधित्व अत्यंत सीमित पाया गया, जहाँ बहुत कम लोग ही सरकारी सेवाओं में कार्यरत हैं, जबकि अधिकांश लोग असंगठित क्षेत्र में कार्य करने के लिए बाध्य हैं।

समग्र रूप से यह अध्ययन दर्शाता है कि शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं तथा इन क्षेत्रों में सुधार के बिना समुदाय का समग्र विकास संभव नहीं है। अतः इस समुदाय के उत्थान के लिए प्रभावी नीतियाँ, जागरूकता कार्यक्रम तथा समावेशी विकास की रणनीतियाँ आवश्यक हैं।

मुख्य शब्द – अहेरिया जाति, शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक असमानता, सरकारी रोजगार, प्रतिनिधित्व, गरीबी, जागरूकता

परिचय

भारतीय समाज की संरचना ऐतिहासिक रूप से जाति, वर्ग और असमानताओं पर आधारित रही है, जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न समुदायों के बीच संसाधनों, अवसरों और जीवन स्तर में स्पष्ट अंतर देखने को मिलता है। सामाजिक असमानता की अवधारणा इन विषमताओं को समझने में सहायक है। कार्ल मार्क्स (1867) ने वर्ग संघर्ष के माध्यम से आर्थिक असमानता को समाज की मूल समस्या माना, जबकि मैक्स वेबर (1922) ने वर्ग, स्थिति और शक्ति के आधार पर असमानता को बहुआयामी रूप में समझाया। इसी संदर्भ में अहेरिया जाति जैसे वंचित समुदायों का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

भारतीय समाज में जाति व्यवस्था सामाजिक स्तरीकरण का प्रमुख आधार रही है। जी. एस. घुर्ये (1932) ने जाति को भारतीय समाज की केंद्रीय संस्था बताया, जबकि एम. एन. श्रीनिवास (1966) ने "संस्कृतिकरण" और "पश्चिमीकरण" के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को स्पष्ट किया। इसके बावजूद, कई निम्न जातियाँ जैसे अहेरिया समुदाय, इन प्रक्रियाओं से अपेक्षित लाभ प्राप्त नहीं कर सकीं और आज भी सामाजिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़ी हुई हैं।

शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रभावी माध्यम माना जाता है। एमिल दुर्खीम (1912) के अनुसार शिक्षा समाज के नैतिक मूल्यों और एकता को बनाए रखने का साधन है। वहीं पाउलो फ्रेरे (1970) ने शिक्षा को उत्पीड़ित वर्गों की मुक्ति का माध्यम बताया। अहेरिया समुदाय में शिक्षा का निम्न स्तर, उच्च ड्रॉपआउट दर, संसाधनों की कमी और सामाजिक जागरूकता का अभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जो उनकी सामाजिक प्रगति में बाधा उत्पन्न करता है।

स्वास्थ्य भी मानव विकास का एक महत्वपूर्ण घटक है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (1948) के अनुसार स्वास्थ्य केवल बीमारी का अभाव नहीं, बल्कि पूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण की स्थिति है। अमर्त्य सेन (1999) ने अपने "क्षमता दृष्टिकोण" में स्वास्थ्य और शिक्षा को मानव विकास के मूल आधार के रूप में प्रस्तुत किया है। अहेरिया समुदाय में स्वास्थ्य सेवाओं की कमी, कुपोषण, स्वच्छता की समस्या और जागरूकता का अभाव उनके जीवन स्तर को प्रभावित करता है।

शिक्षा और स्वास्थ्य की कमजोर स्थिति का सीधा प्रभाव रोजगार, विशेषकर सरकारी रोजगार में प्रतिनिधित्व पर पड़ता है। सामाजिक गतिशीलता के अनुसार व्यक्ति या समूह अपनी सामाजिक स्थिति को बदल सकता है। पितिरिम सोरोकिन (1927) ने सामाजिक गतिशीलता को समाज में परिवर्तन का प्रमुख आधार माना। यदि किसी समुदाय में शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति कमजोर होती है, तो उसकी सामाजिक गतिशीलता भी सीमित रह जाती है।

भारतीय संदर्भ में सरकारी रोजगार सामाजिक सुरक्षा, स्थिर आय और प्रतिष्ठा का प्रमुख स्रोत है। डॉ. भीमराव अंबेडकर (1945) ने सामाजिक न्याय और समान अवसरों के लिए आरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया। हालांकि, अहेरिया समुदाय में शैक्षिक पिछड़ापन, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में कठिनाई और जागरूकता की कमी के कारण सरकारी नौकरियों में उनका प्रतिनिधित्व अपेक्षाकृत कम देखा जाता है।

इस प्रकार शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के बीच गहरा अंतर्संबंध है, जो किसी भी समाज के विकास को प्रभावित करता है। आंद्रे बेतेइले (1972) ने भारतीय समाज में असमानता और स्तरीकरण के अध्ययन में इन कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया है। अहेरिया समुदाय के संदर्भ में इन पहलुओं का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि सामाजिक असमानता केवल आर्थिक नहीं, बल्कि बहुआयामी है।

अंततः, यह अध्ययन अहेरिया जाति में शिक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारणों और उनके परिणामों का विश्लेषण करते हुए सरकारी रोजगार में उनके प्रतिनिधित्व की स्थिति को समझने का प्रयास करता है। यह न केवल समुदाय की

वर्तमान स्थिति को उजागर करेगा, बल्कि सामाजिक न्याय और समावेशी विकास के लिए आवश्यक नीतिगत सुझाव भी प्रदान करेगा।

साहित्य समीक्षा

भारतीय समाज में सामाजिक असमानता एवं स्तरीकरण की समस्या अत्यंत जटिल एवं बहुआयामी रही है। इसे समझने के लिए कार्ल मार्क्स (1867) का वर्ग–संघर्ष सिद्धांत महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है। मार्क्स के अनुसार समाज में उत्पादन के साधनों का असमान स्वामित्व ही वर्ग विभाजन और असमानता का मूल कारण है। जिन वर्गों के पास संसाधनों का नियंत्रण होता है, वे सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से प्रभुत्वशाली बन जाते हैं, जबकि वंचित वर्ग शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार जैसी मूलभूत सुविधाओं से वंचित रह जाते हैं। यह स्थिति आज भी भारत के कई वंचित समुदायों, जैसे अहेरिया जाति, में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

इसी संदर्भ में मैक्स वेबर (1922) ने सामाजिक स्तरीकरण को बहुआयामी दृष्टिकोण से समझाया। उन्होंने वर्ग , प्रतिष्ठा और शक्ति को सामाजिक असमानता के तीन प्रमुख आधार माना। वेबर के अनुसार केवल आर्थिक कारक ही नहीं, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा और राजनीतिक शक्ति भी व्यक्ति के अवसरों और जीवन स्तर को प्रभावित करते हैं। अहेरिया समुदाय के संदर्भ में यह देखा जा सकता है कि उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा निम्न होने के कारण उन्हें शिक्षा एवं रोजगार के अवसरों में बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

भारतीय समाज में जाति व्यवस्था सामाजिक असमानता का प्रमुख आधार रही है। जी. एस. घुर्ये (1932) ने जाति को भारतीय समाज की केंद्रीय संस्था बताते हुए कहा कि यह सामाजिक स्तरीकरण का मुख्य आधार है, जो व्यक्ति की सामाजिक स्थिति, पेशा और अवसरों को निर्धारित करती है। इसी क्रम में एम. एन. श्रीनिवास (1966) ने "संस्कृतिकरण" और "पश्चिमीकरण" की अवधारणाओं के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि निम्न जातियाँ सामाजिक उन्नति के लिए उच्च जातियों के रीति–रिवाजों को अपनाने का प्रयास करती हैं। हालांकि, शिक्षा की कमी और संसाधनों के अभाव के कारण यह प्रक्रिया सीमित रह जाती है, जिससे अहेरिया जैसे समुदायों की स्थिति में अपेक्षित सुधार नहीं हो पाता।

शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का प्रमुख साधन माना गया है। एमिल दुर्खीम (1912) के अनुसार शिक्षा समाज में नैतिकता, अनुशासन और एकता को बनाए रखने का माध्यम है। वहीं पाउलो फ्रेरे (1970) ने शिक्षा को उत्पीड़ित वर्गों के सशक्तिकरण का माध्यम बताया। उनके अनुसार शिक्षा व्यक्ति को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाती है और सामाजिक अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने की क्षमता प्रदान करती है। अहेरिया समुदाय में शिक्षा का निम्न स्तर उनके सामाजिक और आर्थिक विकास में एक बड़ी बाधा के रूप में कार्य करता है, जिससे उनकी सामाजिक गतिशीलता सीमित हो जाती है।

स्वास्थ्य भी मानव विकास का एक महत्वपूर्ण आयाम है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (1948) ने स्वास्थ्य को केवल रोगों की अनुपस्थिति नहीं, बल्कि पूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण की अवस्था बताया है। अमर्त्य सेन (1999) ने अपने "क्षमता दृष्टिकोण" में शिक्षा और स्वास्थ्य को व्यक्ति के समग्र विकास के लिए अनिवार्य तत्व माना। उनके अनुसार यदि व्यक्ति स्वस्थ और शिक्षित नहीं है, तो वह अपने जीवन के अवसरों का पूर्ण उपयोग नहीं कर सकता। अहेरिया समुदाय में स्वास्थ्य सेवाओं की कमी, कुपोषण और स्वच्छता की समस्याएँ उनके जीवन स्तर को प्रभावित करती हैं।

सामाजिक गतिशीलता के संदर्भ में पितिरिम सोरोकिन (1927) का योगदान महत्वपूर्ण है। उन्होंने सामाजिक गतिशीलता को समाज में व्यक्ति या समूह की स्थिति में परिवर्तन के रूप में परिभाषित किया। उनके अनुसार शिक्षा और रोजगार सामाजिक गतिशीलता के प्रमुख साधन हैं। यदि किसी समुदाय में शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति कमजोर होती है, तो उनकी सामाजिक गतिशीलता भी सीमित हो जाती है, जिससे वे उच्च सामाजिक स्तर तक नहीं पहुँच पाते।

भारतीय समाज में सामाजिक न्याय की अवधारणा को डॉ. भीमराव अंबेडकर (1945) ने विशेष महत्व दिया। उन्होंने वंचित वर्गों के उत्थान के लिए शिक्षा और सरकारी रोजगार में आरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया। आरक्षण नीति ने कई समुदायों को अवसर प्रदान किए, लेकिन अहेरिया जैसे कुछ समुदाय आज भी जागरूकता की कमी, शैक्षिक पिछड़ेपन और संसाधनों के अभाव के कारण इन अवसरों का पूर्ण लाभ नहीं उठा पा रहे हैं।

आधुनिक समाज में असमानता और स्तरीकरण के विश्लेषण में आंद्रे बेतेइले (1972) का योगदान उल्लेखनीय है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि सामाजिक असमानता केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों से भी प्रभावित होती है। अहेरिया समुदाय के संदर्भ में यह देखा जा सकता है कि उनकी समस्याएँ बहुआयामी हैं, जिनमें शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार तीनों ही क्षेत्र प्रभावित होते हैं।

उपरोक्त साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के बीच गहरा अंतर्संबंध है। ये तीनों कारक मिलकर किसी भी समुदाय के सामाजिक एवं आर्थिक विकास को निर्धारित करते हैं। हालांकि, अहेरिया जाति पर केंद्रित अध्ययन बहुत कम हैं, जिसके कारण इस समुदाय की विशिष्ट समस्याएँ व्यापक रूप से सामने नहीं आ पाई हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन इस शोध–अंतर को भरने का प्रयास करता है और अहेरिया समुदाय के संदर्भ में शिक्षा एवं स्वास्थ्य समस्याओं तथा सरकारी रोजगार में उनके प्रतिनिधित्व का विस्तृत एवं समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करता

भारतीय समाज में सामाजिक असमानता एवं स्तरीकरण को समझने के लिए कार्ल मार्क्स (1867) और मैक्स वेबर (1922) के सिद्धांत आधार प्रदान करते हैं। जहाँ मार्क्स आर्थिक असमानता को मूल कारण मानते हैं, वहीं वेबर सामाजिक प्रतिष्ठा और शक्ति को भी समान रूप से महत्वपूर्ण मानते हैं। यह दृष्टिकोण स्पष्ट करता है कि वंचित समुदाय, जैसे अहेरिया जाति, बहुआयामी असमानताओं का सामना करते हैं।

भारतीय संदर्भ में जी. एस. घुर्ये (1932) तथा एम. एन. श्रीनिवास (1966) ने जाति व्यवस्था को सामाजिक स्तरीकरण का प्रमुख आधार माना। श्रीनिवास के अनुसार संस्कृतिकरण सामाजिक उन्नति का माध्यम हो सकता है, लेकिन यह प्रक्रिया तब तक प्रभावी नहीं होती जब तक शिक्षा और संसाधनों की उपलब्धता न हो। यही स्थिति अहेरिया समुदाय में भी देखने को मिलती है।

इसके अतिरिक्त लुई दुमों (1970) ने अपनी प्रसिद्ध कृति होमो हायरार्किकस में भारतीय समाज को एक पदानुक्रमित व्यवस्था के रूप में प्रस्तुत किया, जहाँ शुद्धता और अशुद्धता के आधार पर सामाजिक स्थिति निर्धारित होती है। यह अवधारणा निम्न जातियों की सामाजिक स्थिति को समझने में सहायक है।

शिक्षा के संदर्भ में एमिल दुर्खीम (1912) और पाउलो फ्रेरे (1970) के विचार महत्वपूर्ण हैं। इसके साथ ही इवान इलिच (1971) ने शिक्षा व्यवस्था की आलोचना करते हुए कहा कि औपचारिक शिक्षा प्रणाली कई बार सामाजिक असमानता को कम करने के बजाय उसे और बढ़ा देती है। यह दृष्टिकोण उन समुदायों के संदर्भ में प्रासंगिक है जहाँ शिक्षा तक पहुँच सीमित है।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था में असमानता को कृष्ण कुमार (1991) ने भी रेखांकित किया है। उनके अनुसार शिक्षा प्रणाली सामाजिक संरचना से गहराई से जुड़ी हुई है, जिसके कारण निम्न वर्गों और जातियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करना कठिन होता है।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में विश्व स्वास्थ्य संगठन (1948) की परिभाषा के अतिरिक्त नॉर्मन डेनियल्स (1985) ने स्वास्थ्य को सामाजिक न्याय से जोड़ा और बताया कि स्वास्थ्य सेवाओं तक समान पहुँच होना आवश्यक है। यह दृष्टिकोण ग्रामीण एवं वंचित समुदायों की स्थिति को समझने में सहायक है।

अमर्त्य सेन (1999) के क्षमता दृष्टिकोण के साथ–साथ जीन ड्रेज (2002) ने भारत में स्वास्थ्य और शिक्षा की स्थिति पर विस्तृत अध्ययन किया और यह दर्शाया कि सरकारी नीतियों के बावजूद कई वंचित समुदाय इन सेवाओं से वंचित रह जाते हैं।

सामाजिक गतिशीलता के संदर्भ में पितिरिम सोरोकिन (1927) के अलावा आंद्रे बेतेइले (1972) ने भी यह स्पष्ट किया कि भारतीय समाज में गतिशीलता सीमित है और यह जाति तथा वर्ग दोनों से प्रभावित होती है।

इसके अतिरिक्त योगेंद्र सिंह (1973) ने भारतीय समाज में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का अध्ययन करते हुए बताया कि आधुनिकता के बावजूद पारंपरिक संरचनाएँ अभी भी प्रभावी हैं, जिससे वंचित समुदायों का विकास बाधित होता है।

सामाजिक न्याय और समान अवसरों के संदर्भ में डॉ. भीमराव अंबेडकर (1945) का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने शिक्षा और सरकारी रोजगार में आरक्षण को वंचित वर्गों के उत्थान का प्रमुख साधन माना। इसके साथ ही गेल ओमवेट (1994) ने दलित और वंचित समुदायों के आंदोलनों का अध्ययन करते हुए यह बताया कि सामाजिक परिवर्तन के लिए संरचनात्मक सुधार आवश्यक हैं।

समकालीन संदर्भ में सुखदेव थोराट (2007) ने शिक्षा और रोजगार में भेदभाव पर अध्ययन करते हुए यह दर्शाया कि निम्न जातियों को आज भी अवसरों की असमानता का सामना करना पड़ता है। इसी प्रकार नंदिनी सुंदर (2009) ने वंचित समुदायों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डाला है।

उपरोक्त सभी साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के बीच गहरा अंतर्संबंध है तथा ये सभी कारक सामाजिक असमानता को प्रभावित करते हैं। हालांकि, अहेरिया जाति पर विशेष रूप से केंद्रित अध्ययन बहुत कम हैं, जिससे इस समुदाय की विशिष्ट समस्याएँ पूरी तरह सामने नहीं आ पाई हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन इस शोध–अंतर को भरने का प्रयास करता है और अहेरिया समुदाय के संदर्भ में शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सरकारी रोजगार में उनके प्रतिनिधित्व का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन को अहेरिया जाति की सामाजिक, शैक्षिक एवं स्वास्थ्य संबंधी स्थिति को ध्यान में रखते हुए सिकंदराबाद तहसील, बुलंदशहर जनपद में किया जाएगा। इस क्षेत्र का चयन इसके सामाजिक, भौगोलिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं के आधार पर किया गया है।

सिकंदराबाद तहसील राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के अंतर्गत आती है, जिसके कारण यह क्षेत्र विकास और आधुनिक सुविधाओं के निकट होते हुए भी सामाजिक दृष्टि से विविधताओं और असमानताओं से युक्त है। यहाँ ग्रामीण तथा नगरीय दोनों प्रकार के परिवेश विद्यमान हैं, जिससे अध्ययन को व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त होता है।

इस क्षेत्र में अहेरिया जाति की पर्याप्त जनसंख्या पाई जाती है, विशेष रूप से सिकंदराबाद नगर तथा उसके आसपास के क्षेत्रों में। यह उल्लेखनीय है कि यह जाति कई बार आधिकारिक सूचियों में स्पष्ट रूप से सम्मिलित नहीं होती, जिसके कारण इसे विमुक्त जाति के अंतर्गत अन्य श्रेणी में रखा जाता है। अन्य श्रेणी में आने के कारण इस समुदाय को शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सरकारी रोजगार के क्षेत्र में अपेक्षित अवसर प्राप्त नहीं हो पाते, जिससे इनके बीच सामाजिक असमानता और वंचना की स्थिति उत्पन्न होती है।

सिकंदराबाद तहसील के खत्रीवाड़ा मोहल्ला में अहेरिया जाति के लोगों की अधिकता पाई जाती है, जो इस अध्ययन के लिए एक उपयुक्त क्षेत्र प्रदान करता है। एक ओर यह क्षेत्र राष्ट्रीय राजधानी के निकट स्थित है, वहीं दूसरी ओर यह

समुदाय आज भी सामाजिक और आर्थिक रूप से अत्यधिक पिछड़ा हुआ है। आधुनिकता और विकास का प्रभाव इस समुदाय पर बहुत कम दिखाई देता है, जिससे इनके जीवन स्तर में अपेक्षित सुधार नहीं हो पाया है।

अध्ययन क्षेत्र की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि यहाँ ग्रामीण और नगरीय दोनों प्रकार के सामाजिक परिवेश उपलब्ध हैं। इससे शोधकर्ता को विभिन्न परिस्थितियों में रहने वाले लोगों की तुलना करने का अवसर मिलता है, जिससे अध्ययन अधिक विश्वसनीय और व्यापक बनता है।

इसके अतिरिक्त, शोधकर्ता स्वयं इस क्षेत्र का निवासी है और यहाँ के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा स्थानीय परिवेश से भली–भांति परिचित है। इससे डेटा संकलन, साक्षात्कार तथा समुदाय के साथ संपर्क स्थापित करने में सुविधा होगी और अध्ययन अधिक सटीक रूप से किया जा सकेगा।

अतः उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि सिकंदराबाद तहसील, बुलंदशहर जनपद इस अध्ययन के लिए एक उपयुक्त क्षेत्र है, जहाँ अहेरिया जाति की वास्तविक सामाजिक, शैक्षिक एवं आर्थिक स्थिति का गहन अध्ययन किया जा सकता है।

अनुसंधान पद्धति एवं आंकड़े

प्रस्तुत अध्ययन अहेरिया जाति में शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सरकारी रोजगार में प्रतिनिधित्व की स्थिति को समझने के उद्देश्य से किया गया है। यह शोध वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है, जिसमें समुदाय की वर्तमान परिस्थितियों का वर्णन करने के साथ–साथ विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक कारकों के प्रभाव का भी विश्लेषण किया गया है। अध्ययन क्षेत्र के रूप में सिकंदराबाद तहसील, बुलंदशहर जनपद का चयन किया गया है, जहाँ अहेरिया जाति की उल्लेखनीय जनसंख्या पाई जाती है और उनकी वास्तविक स्थिति का प्रत्यक्ष अध्ययन संभव है।

इस अध्ययन में कुल 100 उत्तरदाताओं को सम्मिलित किया गया है, जिनमें 54 पुरुष तथा 46 महिलाएँ हैं। नमूना चयन उद्देश्यपूर्ण नमूना पद्धति के आधार पर किया गया, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि अध्ययन में सम्मिलित उत्तरदाता अहेरिया समुदाय का सही प्रतिनिधित्व करते हों। आंकड़ों के संकलन के लिए प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया। प्राथमिक आंकड़े साक्षात्कार, संरचित प्रश्नावली तथा व्यक्तिगत बातचीत के माध्यम से एकत्रित किए गए, जिससे उत्तरदाताओं के अनुभवों, विचारों और समस्याओं को गहराई से समझा जा सके। द्वितीयक आंकड़ों के अंतर्गत जनगणना रिपोर्ट, सरकारी दस्तावेज, पुस्तकें तथा शोध पत्रों का उपयोग किया गया, जिससे अध्ययन को सैद्धांतिक आधार प्राप्त हुआ।

संग्रहित आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत तथा सारणीकरण जैसी सरल सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से किया गया, जिससे विभिन्न तथ्यों का स्पष्ट एवं तुलनात्मक अध्ययन संभव हो सका। यद्यपि इस अध्ययन की कुछ सीमाएँ हैं, जैसे कि यह केवल सिकंदराबाद तहसील तक सीमित है तथा नमूना आकार 100 होने के कारण इसके निष्कर्षों का सामान्यीकरण सीमित हो सकता है, फिर भी यह अध्ययन अहेरिया जाति की शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सरकारी रोजगार में प्रतिनिधित्व की वास्तविक स्थिति को समझने में महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध होता है।

अहेरिया जाति की शिक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारण एवं परिणाम

क्रम	समस्याएँ/कारण	संख्या (कुल)	प्रतिशत (%)
1	अशिक्षा/कम शिक्षा	36	36

2	स्कूल छोड़ने की प्रवृत्ति	22	22
3	कुपोषण	7	7
4	स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी	16	16
5	गरीबी	13	13
6	जागरूकता की कमी	6	6
कुल		100	100

सारणी 1 के अनुसार अहेरिया जाति में शिक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ व्यापक रूप से विद्यमान हैं। आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि अशिक्षा कम शिक्षा (36 प्रतिशत) सबसे बड़ी समस्या है, जो समुदाय के समग्र विकास में बाधा उत्पन्न करती है। इसके अतिरिक्त स्कूल छोड़ने की प्रवृत्ति (22 प्रतिशत) भी एक महत्वपूर्ण समस्या के रूप में सामने आती है, जिससे शिक्षा का स्तर और अधिक प्रभावित होता है।

स्वास्थ्य के संदर्भ में कुपोषण (7 प्रतिशत) तथा स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी (16 प्रतिशत) प्रमुख समस्याएँ हैं, जो यह दर्शाती हैं कि समुदाय को पर्याप्त स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध नहीं हैं। वहीं गरीबी (13 प्रतिशत) एक मूलभूत कारण के रूप में कार्य करती है, जो शिक्षा और स्वास्थ्य दोनों क्षेत्रों को प्रभावित करती है। इसके साथ ही जागरूकता की कमी (6 प्रतिशत) भी एक महत्वपूर्ण कारक है, जिसके कारण लोग उपलब्ध सुविधाओं का पूरा लाभ नहीं उठा पाते।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि अहेरिया जाति में शिक्षा और स्वास्थ्य की समस्याएँ परस्पर जुड़ी हुई हैं, और इनके पीछे आर्थिक एवं सामाजिक कारण प्रमुख रूप से जिम्मेदार हैं।

सारणी 1 के विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि अहेरिया जाति में शिक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ केवल व्यक्तिगत या आकस्मिक नहीं हैं, बल्कि ये व्यापक सामाजिक संरचना और असमानताओं का परिणाम हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह स्थिति सामाजिक स्तरीकरण और संरचनात्मक असमानता को दर्शाती है, जहाँ संसाधनों, अवसरों और सुविधाओं का वितरण समान रूप से नहीं होता।

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अशिक्षा, विद्यालय त्याग, कुपोषण तथा स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी जैसी समस्याएँ परस्पर जुड़ी हुई हैं और इनके मूल में गरीबी एवं जागरूकता का अभाव प्रमुख कारक हैं। यह स्थिति गरीबी के चक्र को दर्शाती है, जहाँ एक पीढ़ी की वंचना अगली पीढ़ी को भी प्रभावित करती है और सामाजिक उन्नति के अवसर सीमित हो जाते हैं।

इसके अतिरिक्त, यह भी देखा गया कि शिक्षा और स्वास्थ्य की कमजोर स्थिति समुदाय की सामाजिक गतिशीलता को बाधित करती है। जब तक व्यक्ति को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और पर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाएँ प्राप्त नहीं होतीं, तब तक वह सामाजिक सीढ़ी पर ऊपर नहीं उठ पाता। इस प्रकार यह स्थिति सामाजिक असमानता के निरंतर पुनरुत्पादन को दर्शाती है।

अतः समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यह कहा जा सकता है कि अहेरिया जाति की समस्याओं का समाधान केवल आर्थिक सहायता तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, जागरूकता और सामाजिक समानता को बढ़ावा देने वाले समग्र उपायों की आवश्यकता है। तभी इस समुदाय के वास्तविक विकास और सामाजिक समावेशन को सुनिश्चित किया जा सकता है।

अहेरिया जाति के सरकारी रोजगार में प्रतिनिधित्व

क्रम	**स्थिति/कारक**	**संख्या (कुल)**	**प्रतिशत (%)**
1	सरकारी नौकरी में	2	2
2	निजी क्षेत्र में कार्य	12	12
3	दैनिक मजदूरी	48	48
4	बेरोजगार	9	9
5	शिक्षा की कमी (बाधा)	17	17
6	जानकारी की कमी	9	9
7	आर्थिक समस्या	3	3
कुल		100	100

सारणी 2 के अनुसार अहेरिया जाति का सरकारी रोजगार में प्रतिनिधित्व अत्यंत सीमित है। केवल 2 प्रतिशत लोग ही सरकारी नौकरी में कार्यरत हैं, जो इस समुदाय की कमजोर सामाजिक–आर्थिक स्थिति को दर्शाता है। इसके विपरीत, 48 प्रतिशत लोग दैनिक मजदूरी तथा 12 प्रतिशत लोग निजी क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश लोग असंगठित क्षेत्र पर निर्भर हैं।

साथ ही, 9 प्रतिशत लोग बेरोजगार हैं, जो रोजगार के अवसरों की कमी और कौशल विकास की अपर्याप्तता को दर्शाता है। सरकारी रोजगार में कम प्रतिनिधित्व के पीछे कई बाधाएँ सामने आती हैं, जिनमें शिक्षा की कमी (17 प्रतिशत), जानकारी मार्गदर्शन की कमी (9 प्रतिशत) तथा आर्थिक समस्या (3 प्रतिशत) प्रमुख हैं।

यह विश्लेषण स्पष्ट करता है कि शिक्षा और आर्थिक स्थिति सीधे तौर पर रोजगार को प्रभावित करती हैं। जब तक समुदाय में शिक्षा और जागरूकता का स्तर नहीं बढ़ेगा, तब तक सरकारी रोजगार में उनका प्रतिनिधित्व सीमित ही रहेगा।

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि अहेरिया जाति की वर्तमान स्थिति भारतीय समाज में विद्यमान संरचनात्मक असमानताओं और स्तरीकरण की प्रक्रिया का स्पष्ट उदाहरण है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से देखा जाए तो यह समुदाय आर्थिक, शैक्षिक तथा सामाजिक रूप से बहुआयामी वंचना का सामना कर रहा है, जो उनकी सामाजिक प्रगति और गतिशीलता को सीमित करती है।

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे बुनियादी क्षेत्रों में पिछड़ापन केवल व्यक्तिगत समस्या नहीं है, बल्कि यह व्यापक सामाजिक संरचना का परिणाम है। जाति व्यवस्था, आर्थिक संसाधनों की असमानता तथा सामाजिक

भेदभाव जैसे कारक इस स्थिति को और अधिक जटिल बनाते हैं। परिणामस्वरूप, यह समुदाय सामाजिक सीढ़ी पर निम्न स्तर पर ही बना रहता है।

सरकारी रोजगार में सीमित प्रतिनिधित्व इस बात को दर्शाता है कि सामाजिक गतिशीलता के अवसर समान रूप से उपलब्ध नहीं हैं। समाजशास्त्र में इसे संरचनात्मक अवरोध के रूप में समझा जाता है, जहाँ शिक्षा की कमी, संसाधनों का अभाव तथा जागरूकता की कमी मिलकर समुदाय के विकास में बाधा उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार यह स्थिति सामाजिक असमानता के पुनरुत्पादन को भी दर्शाती है, जहाँ एक पीढ़ी की वंचना अगली पीढ़ी तक स्थानांतरित होती रहती है।

इसके अतिरिक्त, यह भी स्पष्ट होता है कि आधुनिकीकरण और विकास के बावजूद पारंपरिक सामाजिक संरचनाएँ अभी भी प्रभावी हैं, जो निम्न वर्गों और जातियों को समान अवसरों से वंचित करती हैं। इसलिए केवल आर्थिक विकास पर्याप्त नहीं है, बल्कि सामाजिक और शैक्षिक सुधारों की भी आवश्यकता है।

अतः समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यह कहा जा सकता है कि अहेरिया जाति की समस्याओं का समाधान समग्र दृष्टिकोण से ही संभव है, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार तीनों क्षेत्रों में समान अवसर, सामाजिक न्याय और जागरूकता को बढ़ावा दिया जाए। तभी इस समुदाय को मुख्यधारा में लाकर उनके समग्र विकास को सुनिश्चित किया जा सकता है।

प्रमुख निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत अहेरिया जाति की शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सरकारी रोजगार में प्रतिनिधित्व से संबंधित आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष सामने आते हैं

प्रथम, अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अहेरिया जाति में शिक्षा का स्तर अत्यंत निम्न है। कुल उत्तरदाताओं में से 36 प्रतिशत अशिक्षित या कम शिक्षित पाए गए, जबकि 22 प्रतिशत उत्तरदाता स्कूल छोड़ने की प्रवृत्ति से प्रभावित हैं। यह स्थिति दर्शाती है कि शिक्षा तक पहुँच सीमित है तथा निरंतरता बनाए रखना भी एक बड़ी चुनौती है। शिक्षा की कमी के कारण समुदाय के लोगों के लिए बेहतर रोजगार के अवसर प्राप्त करना कठिन हो जाता है।

द्वितीय, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ भी इस समुदाय में व्यापक रूप से विद्यमान हैं। अध्ययन से पता चलता है कि 7 प्रतिशत उत्तरदाता कुपोषण की समस्या से ग्रस्त हैं तथा 16 प्रतिशत को स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी का सामना करना पड़ रहा है। यह स्थिति न केवल उनके शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है, बल्कि उनकी कार्य क्षमता और जीवन स्तर पर भी नकारात्मक प्रभाव डालती है।

तृतीय, शिक्षा और स्वास्थ्य समस्याओं के पीछे गरीबी (13 प्रतिशत) एक प्रमुख कारण के रूप में सामने आती है। आर्थिक कमजोरी के कारण लोग अपने बच्चों को उच्च शिक्षा नहीं दिला पाते और स्वास्थ्य सेवाओं का भी पर्याप्त लाभ नहीं उठा पाते। इसके अतिरिक्त जागरूकता की कमी (6 प्रतिशत) भी एक महत्वपूर्ण कारक है, जिसके कारण उपलब्ध सरकारी योजनाओं और सुविधाओं का पूरा उपयोग नहीं हो पाता।

चतुर्थ, सरकारी रोजगार में अहेरिया जाति का प्रतिनिधित्व अत्यंत कम पाया गया है। अध्ययन के अनुसार केवल 2 प्रतिशत उत्तरदाता ही सरकारी नौकरी में कार्यरत हैं, जबकि अधिकांश लोग दैनिक मजदूरी (48 प्रतिशत) और निजी कार्य (12 प्रतिशत) पर निर्भर हैं। यह स्थिति इस बात को स्पष्ट करती है कि समुदाय अभी भी असंगठित क्षेत्र पर अधिक निर्भर है।

पंचम, रोजगार से संबंधित आंकड़ों से यह भी ज्ञात होता है कि 9 प्रतिशत उत्तरदाता बेरोजगार हैं, जो रोजगार के अवसरों की कमी तथा कौशल विकास की अपर्याप्तता को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त सरकारी रोजगार में कम प्रतिनिधित्व के

पीछे शिक्षा की कमी (17 प्रतिशत), जानकारी एवं मार्गदर्शन की कमी (9 प्रतिशत) तथा आर्थिक समस्याएँ (3 प्रतिशत) प्रमुख बाधाओं के रूप में सामने आती हैं।

षष्ठ, समग्र रूप से यह पाया गया कि शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार तीनों एक–दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। शिक्षा की कमी स्वास्थ्य पर प्रभाव डालती है और दोनों मिलकर रोजगार के अवसरों को सीमित करते हैं। परिणामस्वरूप समुदाय सामाजिक और आर्थिक रूप से पिछड़ा रह जाता है।

अंततः, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अहेरिया जाति की वर्तमान स्थिति बहुआयामी वंचना को दर्शाती है, जहाँ शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के क्षेत्र में सुधार के बिना समग्र विकास संभव नहीं है। अतः इस समुदाय के उत्थान के लिए समन्वित प्रयासों, जागरूकता कार्यक्रमों और प्रभावी नीतियों की अत्यंत आवश्यकता है।

समग्र निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट रूप से निष्कर्ष निकलता है कि अहेरिया जाति आज भी सामाजिक, शैक्षिक और आर्थिक दृष्टि से एक वंचित एवं पिछड़ा हुआ समुदाय है। शिक्षा, स्वास्थ्य और सरकारी रोजगार ये तीनों क्षेत्र आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं और इनमें विद्यमान कमियाँ इस समुदाय के समग्र विकास में बाधा उत्पन्न कर रही हैं।

अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि शिक्षा का स्तर निम्न होने के कारण समुदाय के अधिकांश लोग बेहतर रोजगार के अवसरों से वंचित रह जाते हैं। अशिक्षा, स्कूल छोड़ने की प्रवृत्ति तथा संसाधनों की कमी इस समस्या को और अधिक गंभीर बनाती है। शिक्षा की कमी के कारण न केवल व्यक्तिगत विकास प्रभावित होता है, बल्कि सामाजिक गतिशीलता भी सीमित हो जाती है।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी स्थिति संतोषजनक नहीं है। कुपोषण, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी तथा स्वच्छता संबंधी समस्याएँ समुदाय के जीवन स्तर को प्रभावित करती हैं। इन समस्याओं के पीछे गरीबी और जागरूकता की कमी प्रमुख कारण के रूप में सामने आती हैं, जिससे लोग उपलब्ध स्वास्थ्य सेवाओं का पूर्ण लाभ नहीं उठा पाते।

सरकारी रोजगार में प्रतिनिधित्व के संदर्भ में यह पाया गया कि अहेरिया जाति की भागीदारी अत्यंत कम है। अधिकांश लोग असंगठित क्षेत्र जैसे दैनिक मजदूरी या निजी कार्यों में संलग्न हैं। सरकारी नौकरियों में कम प्रतिनिधित्व के पीछे शिक्षा की कमी, मार्गदर्शन का अभाव तथा आर्थिक बाधाएँ प्रमुख कारण हैं।

समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि अहेरिया जाति की समस्याएँ बहुआयामी हैं, जिनका समाधान केवल एक क्षेत्र में सुधार करके संभव नहीं है। शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार तीनों क्षेत्रों में एक साथ सुधार की आवश्यकता है। इसके लिए सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन, जागरूकता का प्रसार तथा विशेष नीतिगत हस्तक्षेप आवश्यक हैं।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जब तक अहेरिया समुदाय को शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के क्षेत्र में समान अवसर और संसाधन उपलब्ध नहीं कराए जाते, तब तक उनका समग्र सामाजिक एवं आर्थिक विकास संभव नहीं हो सकेगा। यह अध्ययन इस दिशा में आवश्यक सुधारों और नीतिगत प्रयासों की ओर संकेत करता है।

संदर्भ सूची

1. कार्ल मार्क्स (1867). दास कैपिटल. हैम्बर्ग ओटो माइस्नर प्रकाशन।
2. मैक्स वेबर (1922). अर्थव्यवस्था और समाज. ट्यूबिंगेन मोहर प्रकाशन।
3. जी. एस. घुर्ये (1932). कास्ट एंड रेस इन इंडिया. मुंबई पॉपुलर प्रकाशन।
4. एम. एन. श्रीनिवास (1966). सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया. नई दिल्ली ओरिएंट ब्लैकस्वान।
5. लुई दुमों (1970). होमो हायरार्किकस. शिकागो यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस।

6. एमिल दुर्खीम (1912). एजुकेशन एंड सोशियोलॉजी. पेरिस फेलिक्स अल्कान।
7. पाउलो फ्रेरे (1970). पेडागॉजी ऑफ द ओप्रेस्ड. न्यूयॉर्क कॉन्टिनम।
8. इवान इलिच (1971). डिस्कूलिंग सोसाइटी. न्यूयॉर्क हार्पर एंड रो।
9. कृष्ण कुमार (1991). पॉलिटिकल एजेंडा ऑफ एजुकेशन. नई दिल्ली सेज प्रकाशन।
10. विश्व स्वास्थ्य संगठन (1948). संविधानरू स्वास्थ्य की परिभाषा. जेनेवा डब्ल्यूएचओ।
11. नॉर्मन डेनियल्स (1985). जस्ट हेल्थ केयर. कैम्ब्रिज कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
12. अमर्त्य सेन (1999). डेवलपमेंट ऐज फ्रीडम. नई दिल्ली ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
13. जीन ड्रेज (2002). इंडिया: डेवलपमेंट एंड पार्टिसिपेशन. नई दिल्ली ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
14. पितिरिम सोरोकिन (1927). सोशल मोबिलिटी. न्यूयॉर्क हार्पर एंड ब्रदर्स।
15. आंद्रे बेतेइले (1972). इनइक्वैलिटी एंड सोशल चेंज. नई दिल्ली ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
16. योगेंद्र सिंह (1973). मॉडर्नाइजेशन ऑफ इंडियन ट्रेडिशन. नई दिल्ली थॉमसन प्रेस।
17. डॉ. भीमराव अंबेडकर (1945). जाति का उन्मूलन. नई दिल्ली नवयाना प्रकाशन।
18. गेल ओमवेट (1994). दलित्स एंड द डेमोक्रेटिक रेवोल्यूशन. नई दिल्ली सेज प्रकाशन।
19. सुखदेव थोराट (2007). दलित्स इन इंडियारू सर्च फॉर कॉमन डेस्टिनी. नई दिल्ली सेज प्रकाशन।
20. नंदिनी सुंदर (2009). सबऑल्टर्न्स एंड सोशियल चेंज. नई दिल्ली ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

Cite this Article

ब्रह्मपाल, डॉ. कमलेश भारद्वाज, "अहेरिया जाति में शिक्षा एवं स्वास्थ्य समस्याएँ और सरकारी रोजगार में प्रतिनिधित्व के कारण एवं परिणाम का समाजशास्त्रीय अध्ययन" The Research Dialogue, Open Access Peer reviewed & Refereed Journal, Pp-646–656, Volume-05, Issue-01, April-2026, https://theresearchdialogue.com/

This is an Open cess Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

ब्रह्मपाल[1], डॉ. कमलेश भारद्वाज[2]

For publication of Research Paper title

अहेरिया जाति में शिक्षा एवं स्वास्थ्य समस्याएँ और सरकारी रोजगार में प्रतिनिधित्व के कारण एवं परिणाम का समाजशास्त्रीय अध्ययन

Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-05, Issue-01, Month April, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i1.66